Lecture Series No:- 97

Online Class
Date - 1/08/2020
Day - Saturday
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Topic,

(1) Mukti,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A part - II
Paper - (5.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans-) जैन धर्म को सामान्य तो इस बात पर निर्भर थी कि महावीर और अन्य जैन उपदेशक ने अपने विचारों को जनता के (माध्यम) सामने सरल और सुबोध भाषा में रखा। इस धर्म में आस्था रखना सरल था। निर्वाण की प्राप्ति के लिए न तो पुरोहितों के माध्यम की जरूरत थी, न ही यज्ञ एवं बलि की। बिना किसी विशेष झंझट के पाँच महाव्रतों एवं त्रिरत्नों का पालन करके मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर सकता (है) था। जैन धर्म के

P.T.O.

(2)

को अनुसार, पापों से बचकर निर्वाण प्राप्ति के लिए मनुष्य को तीन रत्नों (त्रिरत्न) का पालन करना चाहिए। ये तीन रत्न हैं सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र (आचरण)

(i) उचित दर्शन (सम्यक दर्शन):- यहाँ 'दर्शन' शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया गया है। यहाँ दर्शन का अर्थ तत्वज्ञान के प्रति विश्वास या श्रद्धा है। मोक्ष प्राप्त करनेवालों को तीर्थंकरों के आदेशों में श्रद्धा एवं विश्वास रखना आवश्यक है किन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है, etc.

"END"